[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3208 **D**

Unique Paper Code : 2051001002

Name of the Paper : Hindi Aupcharik Lekhan (B) (AEC)

Name of the Course : **Common Prog. Group**

Semester : I

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारत में कार्यालयी हिंदी की वर्तमान स्थिति पर लेख लिखिए। (12)

अथवा

व्यावसायिक हिंदी से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

2. टिप्पण की परिभाषा देते हुए अच्छे टिप्पण की विशेषताएँ लिखिए। (12)

P.T.O.

अथवा

प्रतिवेदन किसे कहते हैं? इसे लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान देना चाहिए।

3. किसी सरकारी कार्यालय में लिपिक की नौकरी हेतु स्ववृत्त तैयार कीजिए। (12)

अथवा

'सूचना का अधिकार अधिनियम' किसे कहते हैं? इसके प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डालिए।

4. अपने मोहल्ले में वर्षा के कारण उत्पन्न हुई जल-भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए नगर पालिका के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए। (12)

अथवा

सूरजकुंड मेला इस बार 'उत्तराखंड राज्य' पर आधारित है - इस पर एक प्रेस विज्ञप्ति तैयार कीजिए।

5. किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए: (6+6)

(क) अर्ध सरकारी पत्र

(ख) प्रारूपण की विशेषताएँ

(ग) विज्ञप्ति का महत्त्व

(घ) कार्यालयी हिंदी का स्वरूप

(1000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3258** **A**

Unique Paper Code : 2051001002

Name of the Paper : Hindi Aupcharik Lekhan (B) (AEC)

Name of the Course : **Common Prog. Group**

Semester : I

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. कार्यालयी हिंदी का स्वरूप, उद्देश्य और क्षेत्र का परिचय दीजिए। (12)

अथवा

व्यावसायिक हिंदी का बाज़ार में क्या महत्त्व है? अपने विचार लिखिए।

2. प्रारूपण का सामान्य परिचय देते हुए प्रारूपण करते समय ध्यान देने योग्य महत्त्वपूर्ण बातों (तथ्यों) को रेखांकित कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

विज्ञप्ति किसे कहते हैं? विज्ञप्ति का एक प्रारूप तैयार कीजिए।

3. स्ववृत्त लेखन क्या है? स्ववृत्त तैयार करते समय किन-किन बातों का समावेश होना चाहिए? (12)

अथवा

सूचना के अधिकार के महत्व पर विचार व्यक्त कीजिए।

4. अपने क्षेत्र में पेड़-पौधों के हो रहे अनियंत्रित कटाव को रोकने के लिए जिलाधिकारी को एक प्रार्थना पत्र लिखिए। (12)

अथवा

दिल्ली में हुए मैराथन के लिए एक प्रेस विज्ञप्ति तैयार कीजिए।

5. किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए : (6+6)

(क) टिप्पण की विशेषताएँ

(ख) प्रतिवेदन का महत्त्व

(ग) सामान्य हिंदी और कार्यालयी हिंदी

(घ) व्यावसायिक पत्र के प्रकार

[This question paper contains 2 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3257** **A**

Unique Paper Code : 2051001001

Name of the Paper : Hindi Bhasha : Sampreshan Aur Sanchar (A) (AEC)

Name of the Course : **Common Prog. Group**

Semester : I

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'संप्रेषण मानव जीवन में सतत और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।' इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (12)

अथवा

संप्रेषण प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए उसके बाधक तत्वों पर प्रकाश डालिए।

2. संप्रेषण के विभिन्न माध्यमों का सविस्तार वर्णन कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

संचार के विभिन्न प्रकारों को सोदाहरण समझाइए।

3. अभाषिक संप्रेषण की विशेषताएँ बताते हुए संप्रेषण में उसकी भूमिका को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

दिल्ली के कूड़ा निस्तारण योजना अभियान पर एक सर्वेषण रिपोर्ट तैयार कीजिए।

4. डायरी लेखन का आशय और उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। अपने जीवन की किसी महत्त्वपूर्ण घटना का डायरी लेखन के अंश के तौर पर उल्लेख कीजिए। (12)

अथवा

ब्लॉग लेखन किसे कहते हैं? सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में इससे होने वाले फायदे का उल्लेख कीजिए।

5. किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए: (6+6)

(क) भ्रामक संप्रेषण

(ख) फीड बैक

(ग) संवाद लेखन

(घ) संपादकीय से अभिप्राय

(10,000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3371** **D**

Unique Paper Code : 2055201001

Name of the Paper : Hindi Bhasha or Sahitya (A) GE

Name of the Course : **B.A. (Prog) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8+8+8=24)

(क) ऐसे कछु अनुभौ कहत न आवै। साहिब मिले तो को बिलगावै ।।टेक।।

सब में हरि है हरि में सब है, हरि अपनों जिन जाना।

साखी नहीं और कोई दूसर, जाननहार सयाना ।।1।।

बाजीगर सो रचि रहा, बाजी का मरम न जाना।

बाजी झूठ सांच बाजीगर, जाना मन पतियाना ।।2।।

P.T.O.

अथवा

साजि चतुरंग-सैन अंग मैं उमंग धारि सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।

भूषन भनत नाद-बिहद नगारन के नदीनद मद गैबरन के रलत है।

ऐलफैल खैलभैल खलक में गैलगैल गजन की ठैलपैल सैल उसलत है।

तारा सो तरनि धूरिधारा में लगत जिमि थारा पर पारा पारावार यों हलत है ।।4।।

(ख) कैसा पागलपन है, मैं बेटी को भी कहता हूँ बेटा,
कड़ुवे मीठे स्वाद विश्व के स्वागत कर, सहता हूँ बेटा,
तुझे विदाकर एकाकी अपमानित-सा रहता हूँ बेटा,
दो आँसू आ गये, समझता हूँ उनमें बहता हूँ बेटा

अथवा

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती-
अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है- बढ़े चलो-बढ़े चलो!



(ग) मेरी भवबाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे स्याम हरित दुति होय।।
फिरि फिरि चितु उत हीं रहतु, टूटी लाज की लाव।
अंग-अंग-छवि-झर में भयौ भौंर की नाव।।

अथवा

अमल धवलगिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।।

2. हिन्दी भाषा की विकास-यात्रा पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

राज-भाषा और राष्ट्र-भाषा का अंतर स्पष्ट कीजिए।।

3. रीतिकालीन कविता की सामान्य प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। (12)

अथवा

भारतेंदु युगीन कविता की विशेषताएं बताइए।

4. 'बिहारी की कविता में श्रृंगार और भक्ति दोनों का सुंदर समन्वय है' पाठ्यक्रम आधारित दोहों के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

भूषण का साहित्यिक परिचय दीजिए।

5. जयशंकर प्रसाद के गीतों में देश-भक्ति प्रमुख भाव है, 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से.....' के आधार पर तर्क सहित उत्तर दीजिए। (12)

अथवा

नागार्जुन कृत 'बादल को घिरते देखा है' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए: (6+6+6=18)

(क) संपर्क भाषा के रुप में हिन्दी

(ख) भक्तिकाल

(ग) छायावाद

(घ) प्रयोगवाद

(ङ) समकालीन कविता

(5)

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No...............**

**Sr. No. of Question Paper : 3372** D

Unique Paper Code : 2055201002

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sahitya : B (GE)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिये: (8×3=24)

(क) गुरु गोविन्द तौ एक है, दूजा यहु आकार ।

आपा भेंट जीवत मरै, तौ पावै करतार ॥

P.T.O.

अथवा

चरन कमल रज कहुँ सब कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई।

छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई।।

(ख) किस गौरव के तुम योग्य नहीं

कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं

जन हो तुम भी जगदीश्वर के

सब है जिसके अपने घर के

फिर दुर्लभ क्या उसके जन को

नर हो, न निराश करो मन को

अथवा

मानव मन को भर देती है दिव्य दीप्ति से

छिप के नदी सी नदिया के पानी पीता

निर्मल नभ अवनी के ऊपर विस्तृत पथ है

काल काग की तरह ठूंठ पर गुमसुम बैठा

(ग) प्रभु ईसा की क्षमाशीलता

नबी मुहम्मद का विश्वास।

जीव दया जिनवर गौतम की,

आओ देखो इसके पास।



अथवा

एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,

ढुलक माथे से गिरे सीकर,

लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा

''मैं तोड़ती पत्थर''

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये (12×4=48)

(क) हिंदी के उद्भव पर विचार कीजिये।

अथवा

भक्तिकाल का सामान्य परिचय दीजिये।

(ख) कबीर के दोहों के आधार पर गुरु का महत्व स्पष्ट कीजिये।

अथवा

तुलसीदास की भक्ति भावना पर विचार कीजिए।

(ग) 'नर हो, न निराश करो मन को' का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'धूप' कविता के आधार पर केदारनाथ अग्रवाल की प्रकृति-चेतना को स्पष्ट कीजिये।

(घ) 'बालिका का परिचय' कविता में कवि हृदय की अभिव्यक्ति है इस कथन पर विचार कीजिए।

अथवा

'वह तोड़ती पत्थर' कविता में चित्रित श्रमिक जीवन के संघर्ष का वर्णन कीजिए।

3. निम्नलिखित विषय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (कोई 3) (6×3=18)

(क) हिंदी की बोलियाँ

(ख) सगुण काव्यधारा

(ग) निराला की श्रमिक चेतना

(घ) मैथिलीशरण गुप्त की कविता में ओज

(ङ) 'कोबट प्रसंग' की मानवता

(च) प्रगतिवाद

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3373** **D**

Unique Paper Code : 2055201003

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya (C) GE

Name of the Course : **B.A. (Prog) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (3×8=24)

(क) संसै खाया सकल जुग, संसा किनहुं न खद्ध।
जे बेधे गुर अखिरां, तिनि संसा चुणि चुणि खद्ध॥

चेतनि चौकी बैसि करि, सतगुर दीन्हाँ धीर।
निरभै होइ निसंक भजि, केवल कहै कबीर॥

P.T.O.

अथवा

मैया मैं नहिं माखन खायौ।
ख्याल परै ये सखा सबै मिलि मेरैं मुख लपटायौ ।।
देखि तुही सींके पर भाजन, ऊंचे धरि लटकायौ।
हौं जु कहत नान्हे कर अपने मैं कैसें करि पायौ ।।
मुख दधि पोंछि, बुद्धि एक किन्ही, दोना पीठि दुरायौ।
डरि साटि, मुसुकाइ जसोदा, स्यामहि कंठ लगायौ ।।
बाल-बिनोद-मोद मन मोह्यो, भक्ति-प्रताप दिखायौ।
सूरदास जसुमति कौ यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायौ ।।

(ख) कनक कनक ते सौगुनो मादकता अधिकाय,
वा खाये बौरात है या पाएँ बौराय।

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननि ही सों बात ।।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आखिन बानि अनोखी अघानि कहूं नहिं आन तिहारियै।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ सुजान सकोच औ सोच सहारियै।
रोकी रहै न दहै घनआनंद बावरी रीझ के हाथनि हारियै ।।



(ग) मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोये थे
सोचा था पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसल खनकेंगी,
और फूल फलकर मैं मोटा सेठ बनूंगा।
पर बन्जर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बन्ध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला !
सपने जाने कहाँ मिटे, सब धूल हो गये !

अथवा

नदी बनने की प्रतीक्षा में, कहीं नीचे
शुष्क नाले में नाचला एक अंजुरी जल,
सभी, बन रहा है कहीं जो विश्वास
जो संकल्प हममें
बसी उसी के ही सहारे हैं।
लीक पर वो चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं।

2. हिन्दी भाषा के भौगोलिक विस्तार को बतलाएं। (12)

अथवा

छायावाद युगीन कविता की प्रवृत्तियों को स्पष्ट कीजिए।

3. कबीर की भक्ति भावना को स्पष्ट करें। (12)

अथवा

कृष्णभक्ति काव्य में सूरदास के महत्व को बताएँ।

4. बिहारी की कविता में शृंगार-भावना को स्पष्ट करें। (12)

अथवा

रीतिकालीन कविता में घनानन्द के महत्व को रेखांकित कीजिए।

5. सुमित्रानंदन पंत की कविताओं के मर्म को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं की प्रासंगिकता बताएँ।

6. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (3×6=18)

(क) वीरगाथा काल

(ख) सूरदास का वात्सल्य - वर्णन

(ग) रीतिमुक्त काव्य और घनानन्द

(घ) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का भावबोध

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3109 **D**

Unique Paper Code : 2052201101

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya ka Itihas (DSC-1)

Name of the Course : **B.A. (Prog) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी भाषा के उद्भव और विकास का विस्तृत विवरण दीजिए। (15)

अथवा

हिंदी साहित्य के आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए।

2. कृष्ण भक्ति काव्य धारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का उदाहरण सहित परिचय दीजिए। (15)

P.T.O.

अथवा

भक्ति आंदोलन के अखिल भारतीय स्वरूप का वर्णन कीजिए।

3. रीतिकाल के नामकरण संबंधी विभिन्न मतों की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

रीतिमुक्त काव्य की प्रमुख प्रवृतियों का विश्लेषण कीजिए।

4. भारतेंदु युगीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

नाटकों के विकास में प्रसादोत्तर नाटकों की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : (10×3=30)

(i) ब्रजभाषा

(ii) राम काव्य

(iii) संत काव्य

(iv) हिंदी गद्य का उद्भव

(v) आधुनिक बोध

[This question paper contains 2 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3095** **D**

Unique Paper Code : 2052201101

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya ka Itihas (DSC - 1)

Name of the Course : **B.A. (Prog) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. पश्चिमी हिंदी की बोलियों का उदाहरण सहित सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

आदिकाल का नामकरण और काल विभाजन किस आधार पर किया गया है? विवेचन कीजिए।

P.T.O.

2. निर्गुण भक्ति काव्यधारा की विशेषताएँ लिखिए। (15

अथवा

राम काव्यधारा की प्रमुख प्रवृतियों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

3. रीतिबद्ध काव्य धारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए। (15

अथवा

रीतिमुक्त काव्य रीतिसिद्ध काव्य से किस प्रकार भिन्न है? स्पष्ट कीजिए

4. नयी कविता की काव्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। (15

अथवा

प्रेमचन्द युगीन उपन्यासों का विश्लेषण कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10×3=30)

(i) आदिकालीन हिंदी

(ii) कृष्ण काव्य

(iii) रीतिकाल का नामकरण

(iv) भारतेन्दु युगीन निबंध

(v) प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएँ

22/2

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3368** **D**

Unique Paper Code : 2055091001

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sahitya ka Udbhav Aur Vikas (A) (GE)

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए। (10,10)

(क) हिन्दी भाषा का विकास

(ख) ब्रजभाषा का क्षेत्र

P.T.O.

(ग) पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ

(घ) पश्चिमी हिन्दी

2. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए। (10,10)

(क) आदिकाल

(ख) सगुण भक्तिधारा

(ग) द्विवेदी-युग

(घ) छायावाद

3. कबीर काव्य में व्यक्त सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

बिहारी के काव्य- सौंदर्य का विश्लेषण कीजिए।

4. आधुनिक कविता में मैथिलीशरण गुप्त के योगदान का आकलन कीजिए। (15)

अथवा



"अकाल और उसके बाद" कविता की मूल संवेदना लिखिए।

5. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (10,10)

(क) पाछै लागा जाइ था, लोक वेद के साथि।
आगैं थैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि।।

अथवा

तनक हरि चितवां म्हारी ओर ।
हम चितवां थें चितवो णा हरि, हिवड़ो बड़ो कठोर ।
म्हारी आसा चितवणि थारी, और णा दूजा ठोर ।

(ख) उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन अतीत अपार है,
गाते नहीं उनके हमीं गुण गा रहा संसार है।
वे धर्म पर करते निछावर तृण-समान शरीर थे,
उनसे वही गम्भीर थे, वर वीर थे, ध्रुव धीर थे।

अथवा

असंख्य कीर्ति - रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी ।
सपूत मातृभूमि के - रुको न शूर साहसी !

P.T.O.

अराति सैन्य सिंधु में, सुबाडवाग्नि से जलो !

प्रवीर हो जयी बनो - बढ़े चलो, बढ़े चलो !

15 88

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3369 D

Unique Paper Code : 2055091002

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya Ka Udbhav aur Vikas (B) (GE)

Name of the Course : B.Com. (Prog.)

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1 (क) हिन्दी के उद्भव और विकास का वर्णन कीजिए। (12)

अथवा

पूर्वी हिन्दी की बोलियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ख) आदिकाल की प्रमुख विशेषताएं बताइए। (12)

P.T.O.

अथवा

भारतेन्दु युग की प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए।

2. कबीर के राम के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रामचरितमानस के 'केवट प्रसंग' के भाव सौंदर्य का वर्णन कीजिए। (12)

3. बिहारी की प्रेम भावना की विवेचना कीजिए।

अथवा

'भूषण ओज रस के कवि हैं' कथन की विवेचना कीजिए। (12)

4. जयशंकर प्रसाद की राष्ट्रीय प्रेम भावना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हरिवंश राय बच्चन की काव्यगत विशेषताओं की चर्चा कीजिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।



अथवा

छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई।।
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई।।
एहिं प्रतिपालऊँ सबु परिवारू। नहिं जानऊँ कछु अउर कबारू।।
जो प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू।। (10)

(ख) बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करे, भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाइ।।

अथवा

दावा द्रुमदंड पर, चीता मृगझुंड पर,
भूषण बितुंड पर जैसे मृगराज है।।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।। (10)

(ग) अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।
सरल तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुमकुम सारा।।

P.T.O.

अथवा

वृक्ष हो भले खड़े,
हों घने हों बड़े,
एक पत्र छाह भी
माँग मत, माँग मत, माँग मत,
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ। (10)

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3370** **D**

Unique Paper Code : 2055091003

Name of the Paper : हिंदी भाषा और साहित्य का उद्भव और विकास (GE) – C

Name of the Course : **B.Com. (Programme)**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये :- (12×12=24)

   (i) हिन्दी के स्वरूप पर विचार कीजिए।

   (ii) अवधी बोली की विशेषताएँ लिखिए।

P.T.O.

(iii) हिन्दी साहित्येतिहास के आदिकाल की सामान्य विशेषताएँ बताइए।

(iv) भारतेन्दुयुगीन साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

2. कबीरदास **अथवा** सूरदास का साहित्यिक परिचय लिखिए। (12)

3. "बिहारी गागर में सागर भरने वाले कवि हैं"। इस कथन की पुष्टि कीजिए। (12)

**अथवा**

घनानंद के काव्य सौन्दर्य पर विचार कीजिए।

4. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का प्रतिपादय लिखिए। (12)

**अथवा**

"रोटी और संसद" कविता का मूल्यांकन कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (10×3=30)

(क) गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पांय।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियों बताय ।।
माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर ।।



**अथवा**

मैया! मैं नहिं माखन खायो
जानि परे ये सखा सबै मिलि मेरों मुख लपटायो।
देखि तुही छींकें पर भाजन ऊँचे धरि लटकायों।
हों जु कहत नान्हें कर अपने मैं कैसे करिपायो।
मुख दधि पोंछि बुद्धि इक कीन्हीं दोना पीठि दुरायो।
डारि साटि मुसुकाई जशोदा स्यामहि कंठ लगायो।
बाल बिनोद मोद मन मोह्यो भक्ति प्रताप दिखायो।
सूरदास जसुमति को यह सुख सिव बिरंचि नहिं पायो।

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ
जा तन की झाँई परे, स्यामु हरित दुति होई ।।
कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय
या खाए बौराए जग, वा पाए बौराय ।।

**अथवा**

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलें तजि आपुनपौ, झझकैं कपटी जे निसांक नहीं ।।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ, यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौ पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं ।।

(ग) चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूंथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध, प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर, हे हरि डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक

अथवा

एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ -
यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है।

[This question paper contains 2 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3207** **D**

Unique Paper Code : 2051001001

Name of the Paper : Hindi Bhasha : Sampreshan Aur Sanchar (A) (AEC)

Name of the Course : **Common Prog. Group**

Semester : I

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी प्रश्न** अनिवार्य हैं।

1. संप्रेषण की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इसकी अनिवार्यता पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

संप्रेषण की प्रक्रिया बताते हुए इसमें कोडिंग और डिकोडिंग की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. संप्रेषण और संचार अभिन्न है इस कथन की तर्कसंगत विवेचना कीजिए। (12)

अथवा

लिखित और मौखिक संप्रेषण का अन्तर स्पष्ट करते हुए संप्रेषण के विविध आयामों की चर्चा कीजिए।

3. संप्रेषण के विविध प्रकारों का विस्तृत विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

सर्वेक्षण आधारित रिपोर्ट भविष्य की संभावनाओं के चिंतन में ही नहीं अपितु उन संभावनाओं के क्रियान्वयन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4. ब्लॉग लेखन की उपयोगिता बताते हुए जल संकट विषय पर एक संक्षिप्त ब्लॉग पोस्ट तैयार कीजिए। (12)

अथवा

एक अच्छे संपादकीय का महत्व बताते हुए एक अच्छे संपादक के गुणों का विवेचन कीजिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :- (6+6)

(क) डायरी लेखन

(ख) अग्रभागी संप्रेषण

(ग) अनुच्छेद लेखन

(घ) संचार : प्रक्रिया

**(1000)**

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

D

Sr. No. of Question Paper : 3333

Unique Paper Code : 2054001003

Name of the Paper : Hindi Cinema Aur Uska Adhyyan (GE)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : 1

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. विभिन्न जनमाध्यमों का परिचय देते हुए सिनेमा के महत्त्व पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

हिंदी सिनेमा के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2. हिंदी सिनेमा के राष्ट्रीय बाजार निर्माण में दर्शक वर्ग की भूमिका पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

P.T.O.

हिंदी सिनेमा को भूमंडलीकरण और स्थानीयता ने किन अर्थों में कितना प्रभावित किया है? अपने विचार प्रकट कीजिए।

3. कथावस्तु और पटकथा में अंतर स्पष्ट करते हुए पटकथा के महत्त्व पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

फिल्मों के सामाजिक-राजनीतिक बहिष्कार और सेंसर बोर्ड की भूमिका पर अपने विचार लिखिए।

4. भारत में जातिव्यवस्था के आईने में 'अछूत कन्या' फिल्म की समीक्षा करें। (18)

अथवा

हिंदी फिल्मों में इस्तेमाल किए गए आइटम गीतों की भाषा और संगीत की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों पर टिप्पणी लिखिए: (6+6+6=18)

(i) क्षेत्रीय सिनेमा का सामान्य परिचय।

(ii) सिनेमा में संवादों की भूमिका।

(iii) हिंदी फिल्मों में अभिनय कौशल का महत्त्व।

(iv) हिंदी सिनेमा में तकनीकी प्रयोगों का संक्षिप्त परिचय।

(v) हिंदी व्यावसायिक फिल्मों में 'शोले' का स्थान।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

**Sr. No. of Question Paper : 3127** **D**

Unique Paper Code : 2052201102

Name of the Paper : Hindi Cinema aur Uska Adhyyan (DSC-2)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी सिनेमा के प्रमुख सैद्धांतिक आधारों का विवेचन कीजिए। (18)

अथवा

'फिल्में अपने समय और समाज का जीवंत दस्तावेज होती हैं इस कथन के आलोक में हिंदी सिनेमा पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

2. हिंदी सिनेमा के उद्भव और विकास के प्रमुख बिंदुओं पर विचार कीजिए। (18)

P.T.O.

अथवा

हिंदी सिनेमा के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

3. सिनेमा में कैमरे की भूमिका पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

कैमरे की तकनीकी खूबियों और खामियों को रेखांकित कीजिए।

4. हिंदी सिनेमा में नई तकनीक की संभावनाओं और चुनौतियों पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

'पीके' फिल्म की समीक्षा कीजिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (9,9)

(क) साहित्य और सिनेमा का संबंध

(ख) साठ के दशक का हिंदी सिनेमा

(ग) कैमरा शॉट्स के विविध आयाम

(घ) 'मुगल-ए-आज़म' और नई तकनीक

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3067** **D**

Unique Paper Code : 2052101103

Name of the Paper : Hindi Kahani (DSC-3)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10 + 10 = 20)

(क) चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना जड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाय। फिर सात जर्मनों को अकेला मार कर न लौटूँ, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े-संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं, और

P.T.O.

पैर पकड़ने लगते हैं। यों अंधेरे में तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था- चार मील तक एक जर्मन नहीं छोड़ा था। पीछे जनरल ने हट जाने का कमान दिया, नहीं तो..।

(ख) आसिन-कातिक के भोर में छा जानेवाले कुहासे से हिरामन को पुरानी चिढ़ है। बहुत बार वह सड़क भूलकर भटक चुका है। किन्तु आज के भोर के इस घने कुहासे में भी वह मगन है। नदी के किनारे धान-खेतों से फूले हुए धान के पौधों की पवनिया गंध आती है। पर्वपावन के दिन गाँव में ऐसी ही सुगंध फैली रहती है। उसकी गाड़ी में फिर चंपा का फूल खिला। उस फूल में एक परी बैठी है।.. जै भगवती!

(ग) गजाधर बाबू बैठकर चाय और नाश्ते का इंतजार करते रहे। उन्हें अचानक ही गनेशी की याद आ गई। रोज सुबह, पैसेंजर आने से पहले वह गरम-गरम पूरियाँ और जलेबी बनाता था। गजाधर बाबू जब तक उठकर तैयार होते, उनके लिए जलेबियाँ और चाय ला कर रख देता था। चाय भी कितनी बढ़िया, काँच के गिलास में ऊपर तक भरी लबालब, पूरे डाई चम्मच चीनी और गाढ़ी मलाई। पैसेंजर भले ही रानीपुर लेट पहुँचे, गनेशी ने चाय पहुंचाने में कभी देर नहीं की। क्या मजाल कि कभी उससे कुछ कहना पड़े।



(घ) सारा घर मक्खियों से भनभन कर रहा था। आँगन की अलगनी पर एक गंदी साड़ी टँगी थी, जिसमें पैबंद लगे हुए थे। दोनों बड़े लड़कों का कहीं पता नहीं था। बाहर की कोठरी में मुंशीजी औंधे मुँह होकर निश्चिंतता के साथ सो रहे थे, जैसे डेढ़ महीने पूर्व मकान-किराया-नियंत्रण विभाग की क्लर्की से उनकी छंटनी न हुई हो और शाम को उनको काम की तलाश में कहीं जाना न हो।

2. 'उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। (17)

अथवा

तत्त्वों के आधार पर 'तीसरी कसम' कहानी का विश्लेषण कीजिए।

3. 'वारिस' कहानी का सार लिखिए। (17)

अथवा

'दोपहर का भोजन' कहानी के कथ्य को उद्घाटित कीजिए।

4. 'तीसरी कसम' कहानी में निहित प्रेम के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। (16)

अथवा

पारिवारिक मूल्यों के विघटन के रूप में 'वापसी' कहानी की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (10 + 10 = 20)

(क) 'घुसपैठिए' कहानी का मूल भाव।

(ख) हिरामन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ग) सिद्धेश्वरी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(घ) 'पंच परमेश्वर' कहानी का शिल्प।

Dec-2022

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No..............**

Sr. No. of Question Paper : 3012 D

Unique Paper Code : 2052101001

Name of the Paper : Hindi Kavita: Aadikal Evam Nirgunbhakti Kavya

हिंदी कविता : आदिकाल एवं निर्गुण-भक्ति काव्य

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi : DSC-1**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. इस प्रश्न पत्र में दो पृष्ठ हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) संगहे पान कम्मान राज। उभ्भारे अंग अंतर बिराज॥

आलिंग बुचि उर चांपि अप्प। अद्धंग तेज तामस दप्प॥

कर धरे से धनु आनंद चित्त। बिहुर्यौ नित्यौ चिरकाल मित्त॥

कम्मान राज मिलि तेज ताप। अरिगिलिबिंटि मिलिमनु सहाय॥

P.T.O.

अथवा

देख-देख राधा-रूप अपारा।

अपरुब के बिहि आनि मिलाओल खिति-तल लावनि-सार।

अंगहि अंग अनंग मुरछायत हेरए पड़ए अथीर।

मनमथ कोटि मथन करु जे जन से हेरि महि मधि गीर।

कत-कत लखिमी चरण-तल नेओछए रंगिनि हेरि बिभोरि।

कर अभिलाख मनहि पद-पंकज अहोनिसि कोर अगोरि।

(ख) मूवाँ पीछे जिनि मिलै, कहै कबीरा राम।

पाथर घाटा लोह सब, (तब) पारस कौंणे काम॥

इस तन का दीवा करौं, बाती मेल्यूं जीव।

लोही सींचौं तेल ज्यूं, कब मुख देखौं पीव॥

अथवा

कहा नर गरबसि थोरी बात।

मन दस नाज टका दस गठिया, टेढ़ौ टेढ़ौ जात॥टेक॥

कहा लै आयौ यहु धन कोऊ, कहा कोऊ लै जात॥

दिवस चारि की है पतिसाही, ज्यूं बनि हरियल पात॥

राजा भयौ गांव सौ पाये, टका लाख दस ब्रात॥

रावन होत लंका को छत्रपति, पल मैं गई बिहात॥

माता पिता लोक सुत बनिता, अंत न चले संगात॥

कहै कबीर राम भजि बौरे, जनम अकारथ जात॥



(ग) खेलत मानसरोवर गईं। जाइ पाल पर ठाढ़ी भईं॥

देखि सरोवर हँसैं कुलेली। पदमावति सौं कहहिं सहेली॥

ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी॥

जौ लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू॥

पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सरवर-पाली॥

कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा॥

सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेहीं। दारुन ससुर न निसरै देहीं॥

पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह।

दहुँ सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निबाह॥

अथवा

कहा मानसर चाह सो पाई। पारस-रूप इहाँ लगि आई॥

भा निरमल तिन्ह पायँन्ह परसे। पावा रूप रूप के दरसे॥

मलय-समीर बास तन आई। भा सीतल, गै तपनि बुझाई॥

न जनौं कौन पौन लेइ आवा। पुन्य-दसा भै पाप गँवावा॥

ततखन हार बेगि उतिराना। पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना॥

बिगसा कुमुद देखि ससि-रेखा। भै तहँ ओप जहाँ जोइ देखा॥

पावा रूप रूप जस चहा। ससि-मुख जनु दरपन होइ रहा॥

नयन जो देखा कवँल भा, निरमल नीर सरीर।

हँसत जो देखा हंस भा, दसन-जोति नग हीर॥ 6

P.T.O.

2. "बानबेरा समय" का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (14)

अथवा

"बानबेरा समय" के काव्य-सौन्दर्य की समीक्षा कीजिए।

3. विद्यापति भक्त अथवा शृंगारिक कवि हैं, तर्क सहित उत्तर दीजिये। (14)

अथवा

विद्यापति की काव्य-भाषा पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

4. कबीर का काव्य "आँखिन देखी पर आधारित है, कागद लेखी पर नहीं", इस कथन के आलोक में कबीर-काव्य की समीक्षा कीजिए। (14)

अथवा

कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

5. "जायसी प्रेम की पीर के कवि हैं", इस कथन के आधार पर जायसी की प्रेम भावना का विवेचन कीजिए। (14)

अथवा

सूफी काव्य परम्परा में जायसी का स्थान निर्धारित कीजिये।

6. किसी एक विषय पर टिप्पणी लिखिए: (7)

(क) विद्यापति का राधा-रूप वर्णन

(ख) "गुरुदेव को अंग" का प्रतिपाद्य

(ग) "मानसरोदक" खंड का काव्य-सौंदर्य

(5000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3259** **A**

Unique Paper Code : 2051001003

Name of the Paper : Social Media Aur Blog Lekhan (C) (AEC)

Name of the Course : **Common Prog. Group**

Semester : I

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सोशल मीडिया की परिभाषा देते हुए इसके कार्यक्षेत्र पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

सोशल मीडिया ने किशोरों को किस प्रकार प्रभावित किया है - स्पष्ट कीजिए।

2. 'सोशल नेटवर्किंग साइट की आपत्तिजनक सामग्री नई पीढ़ी को बर्बाद कर रही है' इस विषय पर अपने तर्क लिखिए। (12)

P.T.O.

अथवा

ब्लॉग लेखन का सामान्य परिचय देते हुए समसामयिक ब्लॉग लेखन की विशेषताएँ बताइए।

3. 'सड़क सुरक्षा अभियान' विषय पर सोशल मीडिया के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए। (12)

अथवा

निजी ब्लॉग तैयार करने की प्रक्रिया का सविस्तार वर्णन कीजिए?

4. सोशल मीडिया के दवारा ऑनलाइन रोजगार के बेहतरीन अवसर प्रदान होते हैं।! इस विषय पर आलेख लिखिए। (12)

अथवा

सोशल मीडिया पर चलने वाली धर्म और राजनीति की खबरों पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

5. किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए : (6+6)

(क) इंस्टाग्राम

(ख) यू ट्यूब के फायदे

(ग) सोशल मीडिया की लत

(घ) सोशल मीडिया में तथ्यों की सच्चाई

[This question paper contains 2 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3209** **D**

Unique Paper Code : 2051001003

Name of the Paper : Social Media Aur Blog Lekhan (C) (AEC)

Name of the Course : **Common Prog. Group**

Semester : I

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सोशल मीडिया का अर्थ बताते हुए इसके उपयोग की सार्थकता लिखिए। (12)

अथवा

सोशल मीडिया की परिभाषा देते हुए इसका महत्त्व लिखिए।

2. 'यू-ट्यूब ने आजकल पढ़ाई को आसान कर दिया है, लेकिन इसकी कुछ सीमाएँ हैं।' इस विषय पर अपने विचार लिखिए। (12)

P.T.O.

अथवा

ब्लॉग लेखन क्या है? ब्लॉग एवं ब्लॉगिंग के बारे में जानकारी दीजिए।

3. 'वन बचाओ अभियान' के प्रचार के लिए सोशल मीडिया हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए। (12)

अथवा

निजी ब्लॉग बनाते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

4. सोशल मीडिया से चुनावी परिणाम पर क्या प्रभाव पड़ा – इस विषय पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। (12)

अथवा

सोशल मीडिया पर चलने वाले किसी समाचार चैनल पर आलेख तैयार कीजिए।

5. किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए : (6+6)

(क) विकिपीडिया

(ख) ट्विटर की उपयोगिता

(ग) ब्लॉग के फायदे

(घ) मेटल हेल्थ और सोशल मीडिया

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

**Sr. No. of Question Paper : 3428** **C**

Unique Paper Code : 62051314

Name of the Paper : आधुनिक भारतीय भाषा - हिन्दी - C (MIL)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi - CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं दो गद्य खंडों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : (2×10=20)

P.T.O.

(क) प्रत्येक देश का साहित्य उस देश के मनुष्यों के हृदय का आदर्श रूप है। जो जाति जिस समय जिस भाव से परिपूर्ण या परिप्लुत रहती है वे सब उसके भाव उस समय के साहित्य की समालोचना से अच्छी तरह प्रगट हो सकते हैं। मनुष्य का मन जब शोक-संकुल, क्रोध से उद्दीप्त, या किसी प्रकार की चिंता से दोचित्ता रहता है तब उसकी मुखच्छवि तमसाच्छन्न, उदासीन और मलिन रहती है; उस समय उसके कंठ से जो ध्वनि निकलती है वह भी या तो फुटही ढोल समान बेसुरी, बेताल, बेलय या करुणापूर्ण, गद्गद तथा विकृत-स्वर-संयुक्त होती है। वहीं जब चित्त आनंद की लहरी से उद्वेलित हो नृत्य करता है और सुख की परंपरा में मग्न रहता है उस समय मुख विकसित कमल-सा प्रफुल्लित-नेत्र मानों हँसता-सा, और अंग-अंग चुस्ती और चालाकी से फिरहरी की तरह फरका करते हैं; कंठ-ध्वनि भी तब वसंत-मदमत्त कोकिला के कंठ-रव से भी अधिक मीठी और सोहावनी मन को भाती है। मनुष्य के संबंध में इस अनुल्लंघनीय प्राकृतिक नियम का अनुसरण प्रत्येक देश का साहित्य भी करता है।



(ख) जानवरों में गधा सबसे ज्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को पल्ले दर्ज का बेवकूफ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याई हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है, किन्तु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी नहीं दिखाई देगी। बैसाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता है, पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर स्थाई विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुःख, हानि-लाभ किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण

हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्‌गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा।

(ग) जापानी वीरता की मूर्ति पूजते हैं। इस मूर्ति का दर्शन वे चेरी के फूल की शांत हँसी में करते हैं। क्या ही सच्ची और कौशलमयी पूजा है! वीरता सदा जोर भरा हुआ ही उपदेश नहीं करती। वीरता कभी-कभी हृदय की कोमलता का भी दर्शन कराती है। ऐसी कोमलता देखकर सारी प्रकृति कोमल हो जाती है; ऐसी सुंदरता देखकर लोग मोहित हो जाते हैं। जब कोमलता और सुंदरता के रूप में वह दर्शन देती है तब चेरी-फूल से भी ज्यादा नाजुक और मनोहर होती है। जिस शख्स ने यूरोप को 'क्रूसेड्ज' के लिये हिला दिया वह उन सबसे बड़ा वीर था जो लड़ाई में लड़े थे। इस पुरुष में वीरता ने आँसुओं और चाहों का लिबास लिया। देखो, एक छोटा सा मामूली आदमी यूरोप में जाकर रोता है कि हाय, हमारे तीर्थ



हमारे वास्ते खुले नहीं और यहूद के राजा यूरोप के यात्रियों को दिक करते हैं। इस आँसू-भरी अपील को सुनकर सारा यूरोप उसके साथ रो उठा। यह आला दरजे की वीरता है।

(घ) पृथ्वी के उच्छ्वास के समान उठते हुए धुंधलेपन में वे कच्चे घर आकंठ-मग्न हो गए थे - केवल फूस के मटमैले और खपरैल के कत्थई और काले छप्पर, वर्षा में बढ़ी गंगा के मिट्टी जैसे जल में पुरानी नावों के समान जान पड़ते थे। कछार की बालू में दूर तक फैले तरबूज और खरबूजे के खेत अपने सिर की और फूस के मुठठियों, टट्टियों और रखवाली के लिए बनी पर्णकुटियों के कारण जल में बसे किसी आदिम द्वीप का स्मरण दिलाते थे। उनमें एक-दो दीए जल चुके थे, तब मैंने दूर पर एक छोटा-सा काला धब्बा आगे बढ़ता देखा। वह घीसा ही होगा, यह मैंने दूर से ही जान लिया। आज गुरु साहब को उसे विदा देना है, यह उसका नन्हा हृदय अपनी पूरी संवेदना-शक्ति

से जान रहा था, इसमें संदेह नहीं था। परन्तु उस उपेक्षित बालक के मन में मेरे लिए कितनी सरल ममता और मेरे विछोह की कितनी व्यथा हो सकती है, यह जानना मेरे लिए शेष था।

2. (क) हिन्दी गद्य के विकास में पत्र पत्रिकाओं के योगदान पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

रेखाचित्र के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'दो बैलों की कथा' किसान जीवन की जीवंत प्रस्तुति है, स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'गंगा स्नान करने चलोगे' का प्रतिपाद्य लिखिए।



(ग) 'बहादुर' आधुनिक समाज के कटु यथार्थ की मार्मिक अभिव्यक्ति है, तर्क सहित समझाइए। (12)

अथवा

'वापसी' कहानी का सारांश लिखिए।

(घ) 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है' की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'गेहूँ बनाम गुलाब' की मुख्य विशेषताओं का दर्शन कीजिए।

3. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) 'प्रेमचंद' का साहित्यिक योगदान

(ख) हिन्दी स्वातन्त्र्योत्तर नाटक

(ग) कहानी और संस्मरण में अंतर

[This question paper contains 2 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

**Sr. No. of Question Paper : 3701** **C**

Unique Paper Code : 12055302

Name of the Paper : Bhasha aur Samaj

Name of the Course : **Hindi (Hons.)**

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. भाषा और समाज के अंत: संबंधों को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

भाषा व्यवहार मानव संबंधों को किस तरह से अभिव्यक्त करता है। विस्तार से उल्लेख कीजिए।

2. भाषा समुदाय से क्या अभिप्राय है? दिल्ली महानगर के भाषा समुदाय की व्याख्या कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

'भारत बहु भाषिक राष्ट्र है' - इस आधार पर इसकी बहुभाषिकता की स्थिति को स्पष्ट कीजिए।

3. भाषा और संस्कृति के अंत: संबंध पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

भाषाई अस्मिता से क्या समझते है? भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों की भाषा पर विचार कीजिए?

4. भाषा सर्वेक्षण का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

भाषा सर्वेक्षण के लिए भाषाई समुदाय तथा क्षेत्र विशेष का चुनाव किस प्रकार होता है स्पष्ट कीजिए।

5. **किन्हीं तीन** पर टिप्पणी कीजिए। (9,9,9)

(क) भाषा व्यवहार

(ख) भाषा और समाज

(ग) भाषा और जाति

(घ) बहुभाषिकता

(च) भाषाई अस्मिता

(छ) भाषा के नवीन प्रयोग

(1000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 249 C

Unique Paper Code : 52051307

Name of the Paper : Hindi 'A' (Core MIL)

Name of the Course : B.Com. (Prog.)

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी निबंध यात्रा का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (12)

अथवा

उपन्यास के स्वरूप को उसके तत्वों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2 'धूप का एक टुकड़ा' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'हीली बोन की बतखें' शिल्प की दृष्टि से अत्यंत सशक्त रचना है – इस कथन पर विचार कीजिए।

3. 'करुणा' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए। (12)

अथवा

निबंध के तत्वों के आधार पर 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध की समीक्षा कीजिए।

4. 'चीनी भाई' एक संस्मरणात्मक रेखाचित्र है– इस कथन का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

'जिन लाहौर नइ देख्या' की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (10×2=20)



(क) आप सचमुच सौभाग्यशाली हैं। पहले दिन यहाँ आए और सामने घोड़ा-गाड़ी! आप देखते रहिए – कुछ ही देर में गिरजे के सामने छोटी-सी भीड़ जमा हो जाएगी। उनमें से ज्यादातर लोग ऐसे होते हैं, जो न वर को जानते हैं, न वधू को। लेकिन एक झलक पाने के लिए घंटों बाहर खड़े रहते हैं। आपके बारे में मुझे मालूम नहीं, लेकिन कुछ चीजों को देखने की उत्सुकता जीवन भर खत्म नहीं होती।

(ख) लोग कहते थे कि हीली सुन्दर है पर स्त्री नहीं है। वह बांझ क्या, जिसमें साँप नहीं बसता? – हीली की आँखें सहसा और घनी हो आयीं – नहीं इससे आगे वह नहीं सोचना चाहती। व्यथा मरकर भी व्यथा से अन्य कुछ हो जाती है? बिना साँप की बांबी – अपरूप अनर्थक मिट्टी का ढूह। यद्यपि वह याद करना चाहती तो याद करने को कुछ था, बहुत-कुछ था – प्यार उसने पाया था और उसने सोचा भी था कि अर्ध मात्र जाति है, छंद मात्र व्यक्ति है।

(ग) नासिर: अगर मुझे शेर के अलावा उतनी खुशी किसी और काम में होती तो मैं शायरी न करता दरअसल आज भी अगर मुझे कोई ऐसी खुशी मिल जाये तो शायरी का बदल हो तो मैं शायरी छोड़ दूँ। लेकिन शायरी से जयादा खुशी मुझे किसी और चीज में नहीं मिलती।

P.T.O.

हिदायत : क्या खुशी मिलती है तुम्हें शायरी से?

नासिर : सर की हकीत की तरजुमानी ... उसे इस तरह बयान करना कि उसकी आँच से दिल पिघल जाए।

6. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) ललित निबंध

(ख) संस्मरण

(100)

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3426** **C**

Unique Paper Code : 62051312

Name of the Paper : Hindi A

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (2×7.5=15)

(क) साढ़े सात साल के बाद वे लोग लाहौर से अमृतसर आए थे। हॉकी का मैच देखने का तो बहाना ही था, उन्हें ज्यादा चाव उन घरों और बाजारों को फिर से देखने का था जो साढ़े सात साल पहले उनके लिए पराए हो गए थे। हर सड़क पर मुसलमानों

P.T.O.

की कोई-न-कोई टोली घूमती नजर आ जाती थी। उनकी आँखें इस आग्रह के साथ वहाँ की हर चीज को देख रही थीं जैसे वह शहर साधारण शहर न होकर एक अच्छा-खासा आकर्षण-केंद्र हो।

अथवा

यदि हमारा चित्त किसी विषय में उत्साहित रहता है तो हम अन्य विषयों में भी अपना उत्साह दिखा देते हैं। यदि हमारा मन बढ़ा हुआ रहता है तो हम बहुत से काम प्रसन्नतापूर्वक करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसी बात का विचार करके सलाम-साधक लोग हाकिमों से मुलाकात करने के पहले अर्दलियों से उनका मिजाज पूछ लिया करते हैं।

(ख) अंधेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा ।।

नीच ऊँच सब एकहि ऐसे। जैसे भँडुए पंडित तैसे ।।

कुल-मरजाद न मान बड़ाई। सबै एक से लोग-लुगाई ।।

जात-पाँत पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई ।।

अथवा

उसने तो अपने किए का फल पा लिया, पर मैं समस्या का समाधान नहीं पा सकी। इस बार की असफलता ने तो बस मुझे रुला ही दिया। अब तो इतनी हिम्मत भी नहीं रही कि एक बार



फिर मध्यम वर्ग में अपना नेता उत्पन्न करके फिर से प्रयास करती। इन दो हत्याओं के भार से ही मेरी गर्दन टूटी जा रही थी, और हत्या का पाप ढोने की न इच्छा थी, न शक्ति ही। और अपने सारे अहं को तिलांजलि देकर बहुत ही ईमानदारी से मैं कहती हूं कि मेरा रोम-रोम महसूस कर रहा था कि कवि भरी सभा में ज्ञान के साथ जो नहला फटकार गया था, उस पर इक्का तो क्या, मैं दुग्गी भी न मार सकी। मैं हार गयी, बुरी तरह हार गयी।

2. हिंदी कहानी के विकास के विभिन्न चरणों पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

हिंदी गद्य के विकास में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका पर विचार कीजिए।

3. प्रेमचंद की 'जुलूस' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'मैं हार गई' कहानी की केंद्रीय भाव-भूमि को स्पष्ट कीजिए।

4. 'उत्साह' निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'रहिमन पानी राखिए' निबंध का सार लिखिए।

P.T.O.

5. 'भोलाराम का जीव' में निहित व्यंग्य चेतना को उद्घाटित कीजिए। (12)

अथवा

यात्रा-वृतांत के आधार पर 'चीड़ों पर चाँदनी' का मूल्यांकन कीजिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (12)

(क) रेखाचित्र

(ख) जयशंकर प्रसाद और हिंदी नाटक

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 250** **C**

Unique Paper Code : 52051316

Name of the Paper : Hindi – B

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : (10×2)

(क) सहसा नन्हकू का मुख भयानक हो उठा! उसने कहा, "चुप रहो, तुम उसको जानकर क्या करोगी?" वह उठ खड़ा हुआ। उद्विग्न की तरह न जाने क्या खोजने लगा। फिर स्थिर होकर उसने कहा, "दुलारी! जीवन में आज यह पहला ही दिन है कि एकान्त रात में एक स्त्री मेरे पलंग पर आकर बैठ गई है, मैं धिरकुमार! अपनी एक प्रतिज्ञा का निर्वाह करने के लिए सैकड़ों

P.T.O.

असत्य, अपराध करता फिर रहा हूँ क्यों? तुम जानती हो? मैं स्त्रियों का घोर विद्रोही हूँ और पन्ना!.. किन्तु उसका क्या अपराध।

अथवा

"किसी खास जांच के ऐन मौके पर किसी दूसरे शहर की.. संस्था से उधार लेकर, सूक्ष्मदर्शी यन्त्र हाजिर! सब चीजें मौजूद हैं। आइए, देख जाइए। जी हां, ये तो हैं सामने। लेकिन, जांच, खत्म होने पर सब गायब, सब अन्तर्धान। कैसा जादू है। खर्चे का आकड़ा खूब फूलाकर रखिए। सरकार के पास कागजात भेज दीजिए। खास मौकों पर ऑफिसों के धुंधले गलियारों और होटलों के कोनों में मुट्ठियां गरम कीजिए। सरकारी 'ग्राण्ट' मंजूर! और, उसका न जाने कितना हिस्सा, बड़े ही तरीके से संचालकों की जेब में! जी!"

(ख) अब हम लोगों के शरीर का बल नन्यून हो गया, विदेशी शिक्षाओं से मनोवृत्ति बदल गई, जीविका और धन उपार्जन के हेतु अब हम लोगों को पाँच-पाँच, छ-छ पहर पसीना चुआना पड़ेगा, रेल पर इधर से उधर कलकत्ते से लाहौर और बम्बई से शिमला दौड़ना पड़ेगा, सिविल सर्विस का, बैरिस्टरी का, इंजीनियरी का इम्तिहान देने को विलायत जाना होगा, बिना यह सब किए काम नहीं चलेगा, क्योंकि देखिए, कृस्तान, मुसलमान, पारसी यही हाकिम हुए जाते हैं, हम लोगों की दशा दिन दिन हीन हुई जाती है।



जब पेट भर खाने ही को न मिलेगा तो धर्म कहाँ बाकी रहेगा, इससे जीवनमात्र के सहज धर्म उदरपूरण पर अब ध्यान दीजिए। परस्पर का बैर छोड़िए।

अथवा

आत्मघात, मनुष्य की जीवन से पराजित होने की स्वीकृति है। बिब्रिया-जैसे स्वभाव के व्यक्ति पराजित होने पर भी पराजय स्वीकार नहीं करते। कौन कह सकता है कि उसने सब ओर से निराश होकर अपनी अन्तिम पराजय को भूलने के लिए ही यह आयोजन नहीं किया? संसार ने उसे निर्वासित कर दिया, इसे स्वीकार करके और गरजती हुई तरंगों के सामने आँचल फैलाकर क्या वह अभिमानिनी स्थान की याचना कर सकती थी?

2. गद्य की दृष्टि से द्विवेदी युग का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

हिन्दी निबंध की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए। (12)

3. नन्हकूसिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'पक्षी और दीमक' में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए। (12)

P.T.O.

4. 'ईमानदारी' निबंध के आधार पर बालकृष्ण भट्ट की निबंध-कला पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'नाखून क्यों बढ़ते हैं" की मूल संवेदना लिखिए। (12)

5. प्रहसन की दृष्टि से 'अन्धेर नगरी' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

"बिबिया के माध्यम से महादेवी वर्मा ने स्त्री की दयनीय अवस्था को चित्रित किया है।" स्पष्ट कीजिए। (12)

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :

(क) कहानी

(ख) एकांकी

(ग) रेखाचित्र (7)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3427 C

Unique Paper Code : 62051313

Name of the Paper : Hindi-B

Name of the Course : B.A. (Programme) CBCS

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी नाटक के उदभव और विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

हिंदी गदय की विभिन्न विधाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

P.T.O.

2. 'बूढ़ी काकी' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'उसने कहा था' कहानी में चित्रित प्रेम के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

3. निबंध के तत्वों के आधार पर 'मेले का ऊँट' निबंध की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'सदाचार का ताबीज' निबंध का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

4. 'अंधेर नगरी' नाटक की कथावस्तु की विवेचना कीजिए। (12)

अथवा

'बिंदिया' का चरित्र-चित्रण प्रस्तुत कीजिए।

5. किन्हीं दो अवतरणों की संप्रसंग व्याख्या कीजिए : (2×10)

(क) बूढ़ी काकी ने सिर उठाया, न रोईं न बोलीं। चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली गईं। आवाज़ ऐसी कठोर थी कि हृदय और मस्तिष्क की सम्पूर्ण शक्तियाँ, सम्पूर्ण विचार और सम्पूर्ण भार



उसी ओर आकर्षित हो गए थे। नदी में जब कगार का कोई वृहद खंड कटकर गिरता है तो आस-पास का जल समूह चारों और से उसी स्थान को पूरा करने के लिए दौड़ता है।

(ख) भारत मित्र संपादक! जीते रहो, दूध बताशे पीते रहो। भांग भेजी सो अच्छी थी। फिर वैसी ही भेजना। गत सप्ताह अपना चिट्ठा आपके पत्र (भारत मित्र) में टटोलते हुए 'मोहन मेले' के लेख पर निगाह पड़ी। पढ़कर आपकी दृष्टि पर अफसोस हुआ। भाई, आपकी दृष्टि गिद्ध की सी होनी चाहिए, क्योंकि आप संपादक हैं, किंतु आपकी दृष्टि गिद्ध की सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की सी निकली, जिसने ऊँचे आकाश में चढ़े-चढ़े भूमि पर गेहूं का एक दाना पड़ा हुआ देखा, पर उसके नीचे जो जाल बिछा रहा था वह उसे नहीं सूझा। यहां तक कि उस गेहूं के दाने को चुगने के पहले जाल में फंस गया।

(ग) अंधेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।

नीच ऊँच सब एकहि ऐसे। जैसे भेंड़ुए पंडित तैसे।।

कुल-बरजाद न मान बड़ाई। सबै एक से लोग-लुगाई।।

जात-पाँत पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) खड़ी बोली हिंदी

(ख) नई कहानी

(ग) उपन्यास के तत्व

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3425** C

Unique Paper Code : 62081341

Name of the Paper : हिन्दी गद्य उद्भव और विकास (Hindi-C), SEC

Name of the Course : **B.A.(Prog.) Functional Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (10×2=20)

(क) मिस्टर शामनाथ ने इंतजाम तो कर दिया, फिर भी उनकी उधेड़-बुन खत्म नहीं हुई। जो चीफ अचानक उधर आ निकला, तो? आठ-दस मेहमान होंगे, देसी अफसर, उनकी स्त्रियाँ होंगी,

P.T.O.

कोई भी गुसलखाने की तरफ जा सकता है। क्षोभ और क्रोध में वह झुझलाने लगे। एक कुर्सी को उठा कर बरामदे में रखते हुए बोले- आओ माँ, इस पर जरा बैठो तो ।

(ख) सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर मुझे चौका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी। पर आज उस लघुप्राण की खोज है परंतु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने यहीं मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो ।

(ग) यथावत विद्या और ज्ञान पहले जिह्वया से कहकर प्रकट न किये गये होते तो केवल लेख शक्ति से कुछ न होता, न हमारी सभ्यता इस छोर तक पहुँचती । जबान को दबाना क्रोध को दबा रखने का एक ही उपाय है। कई बार की आजमाई हुई बात है कि क्रोध आया हो चिल्लाने के एवज धीरे-धीरे बोलो, क्रोध क्रम-क्रम आप ही शांत हो जाएगा। जीभ समाज को कहाँ तक लाभदायक हुई सो दिखला चुके ।



(घ) बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बादल गया और स्नेह भी वह नहीं जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिसेर देता है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौना लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा । इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बूढ़ी दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गदगद हो गया।

2. (क) हिन्दी गद्य के उद्भव और विकास को स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

हिन्दी नाटक की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।

(ख) 'चीफ की दावत' कहानी के आधार पर शामनाथ का चरित्र चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

'ज़बान' निबंध के आधार पर बालकृष्ण भट्ट की निबंध लेखन कला पर विचार कीजिए ।

(ग) 'वापसी' संस्मरण की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'गंगा स्नान करने चलोगे' का सारांश लिखिए।

(घ) गाँव की अनिवार्य आवश्यकताएँ क्या है? शिवपूजन सहाय के निबंध के आधार पर सोदाहरण उत्तर दीजिए। (12)

अथवा

'होना कुछ नहीं का' का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. निम्नलिखित में से **किसी एक** पर टिप्पणी लिखिए: (7)

(क) ईदगाह कहानी की मूल संवेदना ।

(ख) रेखाचित्र

(ग) हिन्दी कहानी का विकास।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4520 C

Unique Paper Code : 12051303

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : B.A.(H) Hindi - CBCS

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'उसने कहा था' कहानी में निहित मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर 'छोटा जादूगर' कहानी की समीक्षा कीजिए।

2. 'तीसरी कसम' कहानी के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी के आधार पर शामनाथ का चरित्र - चित्रण कीजिए।

3. 'वापसी' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'बाया का मर्म' कहानी व्यक्ति की सूक्ष्म संवेदना व्यक्त करती है - इस कथन पर विचार कीजिए।

4. 'दोपहर का भोजन' कहानी का सार लिखिए। (12)

अथवा

'घुसपैठिये' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (9×3=27)

(क) सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नयी स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झटपट उठा और छतरी के बाहर आकर भोंकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकारकर बुलाया; पर वह उसके पास न आया हार कर चारों तरफ



दौड़-दौड़ कर भोंकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता तो तुरंत ही फिर दौड़ पड़ता। कर्त्तव्य हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था।

अथवा

मैं कुछ बोला नहीं। मेरा मन जाने कैसे गम्भीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ पड़ा था। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भरी दुर्घटना मालूम होती थी।

(ख) गजाधर बाबू खुश थे, बहुत खुश। पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर घर जा रहे थे। इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रह कर काटा था। उन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे।

अथवा

शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पल-भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले, "नहीं, मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना-जाना यहाँ फिर से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ

से कहें कि जल्दी ही खाना खा के ज्ञान को ही अपनी कोठरी में चली जाएँ।

(ग) शेरे ने जरा रुककर, घबराकर कहा - "नहीं - शाहनी। .. "शेरे के उत्तर की अनसुनी कर शाहनी जरा चिंतित स्वर से बोली, "जो कुछ भी हो रहा है, अच्छा नहीं। शेरे, आज शाहजी होते तो शायद कुछ बीच-बचाव करते। पर .. "शाहनी कहते-कहते रुक गई। आज क्या हो रहा है। शाहनी को लगा जैसे जी भर-भर आ रहा है।

अथवा

मनुष्य समझा रहा है - हम आप लोगों को हाथों हाथ लेंगे। अपने घर, मकान, झोपड़ों में रखेंगे, बस्तियों में बसाएंगे, कहीं भी जाएंगे तो आपको अपने साथ ले जाएंगे .. यहाँ न आप लोगों को दूसरे के आगे तनकर खड़ा होने का अधिकार है और न किसी को खड़ा होने के लिए एक बीते से ज्यादा जमीन दी गई है।

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

**Sr. No. of Question Paper : 3478** **C**

Unique Paper Code : 62054306

Name of the Paper : Hindi Katha Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10 + 10 = 20

(क) उन्हें अपने जीवन में एक आधार की जरूरत थी,-सदेह आधार की, जिसके सहारे वह इस जीर्ण दशा में भी जीवन-संग्राम में खड़े रह सकें, जैसे किसी उपासक को प्रतिमा की जरूरत होती है बिना प्रतिमा के वह किस पर फल चढ़ाए, किसे गंगा-जल

P.T.O.

से नहलाए, किसे स्वादिष्ट चीजों का भोग लगाए। इस भांति वकील साहब का की जरूरत थी। रतन उनके लिए सदेह कल्पना मात्र थी जिससे उनकी आत्मिक पिपासा शांत।

अथवा

वह समझता था जालपा इसी में प्रसन्न है। अपनी चिंताओं के बोझ से वह उसे दबाना नहीं चाहता था, पर आज उससे ज्ञात हुआ, जालपा उतनी ही चिंताशील है, जितना वह खुद था इस वक्त उसे अपनी मनोव्यथा कह डालने का बहुत अच्छा अवसर मिला था, पर हाय संकोच!

(ख) "क्या नाम है तुम्हारा लड़के?" हेमंत ने अहसान चढ़ाने की गरज से पूछा। कुछ क्षणों के लिए टेबुल पर गंभीर मौन छा गया। जगदीश बाबू की आँखे चाय की प्याली पर ही झुकी रह गई। मदन की आँखों के सामने विगत स्मृतियाँ घूमने लगीं _ जगदीश कब का एक दिन ऐसे ही नाम पूछना... फिर... दाज्यू आपने तो कल थोड़ा ही खाया... और एक दिन किसी की प्रेस्टिज का ख्याल नहीं रहता तुम्हें ...

अथवा



आज एक अद्भूत स्फूर्ति और उत्साह का अनुभव हो रहा है। नीले रंग का कुर्ता और चूड़ीदार पाजामा पहना तो नीले रंग की बिंदी माथे पर लगाने को हाथ बढ़ गया। फिर न जाने क्या सोच कर उसे छोड़ दिया और बड़ी सी हरी बिन्दी लगा ली। राजन होता तो कहता, नीले पर हरा? क्या तुक है?.

2. उपन्यास के स्वरूप और संरचना का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

उपन्यास में भाषा-शैली के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

3. 'गबन' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'गबन' उपन्यास के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. कहानी में कथानक के महत्व को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

कहानी में 'देशकाल और वातावरण' पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

5. कहानी के तत्वों के आधार पर 'परदा' कहानी की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'रोज़' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए :- (7)

(क) 'दाज्यू' में जगदीश बाबू का चरित्र-चित्रण

(ख) 'हरी बिन्दी' की भाषा-शैली

(ग) 'दिल्ली में एक मौत' शीर्षक की सार्थकता।

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3453** **C**

Unique Paper Code : 62054306

Name of the Paper : Hindi Katha Sahitya

Name of the Course : **B.A (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : **III**

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10 + 10

(क) नाटक उस वक्त पास होता है, जब रसिक समाज उसे पसंद कर लेता है। बारात का नाटक उस वक्त पास होता है, जब राह चलते आदमी उसे पसंद कर लेते हैं। नाटक की परीक्षा

P.T.O.

चार-पाँच घंटे तक होती रहती बारात की परीक्षा के लिए केवल इतने ही मिनटों का समय होता है। सारी सजावट, सार दौड़-धूप और तैयारी का निबटारा पाँच मिनटों में हो जाता है।

अथवा

रिश्वत में उसने हज़ारों रुपये मारे थे, पर कभी एक क्षण के लिए भी उसने ग्लानि न आई थी। रिश्वत बुद्धि से, कौशल से, पुरुषार्थ से मिलती है। दान पौरुषहीन, कर्महीन, या पाखंडियों का आधार है। वह सोच रहा था, मैं अब इतना दीन हूँ कि भोजन और वस्त्र के लिए मुझे दान लेना पड़ता है।

(ख) भीड़ भय से चीखकर ओट में भागती हुए औरतों पर दया कर के दरवाज़े के सामने से डर गयी थी। चौधरी बेसुध पड़े थे। जब उन्हें होश आया, ड्योढ़ी का परदा आंगन में सामने पड़ा था; परन्तु उसे उठाकर फिर से लटका देने का सामर्थ्य उनमें शेष न था। शायद अब इसकी आवश्यकता भी न रही थी। परदा जिस भावना का अवलम्ब था, वह मर चुकी थी।

अथवा

जगदीशबाबू का मुँह क्रोध के कारण तमतमा गया, शब्दों पर अधिकार नहीं रह सका। मदन 'प्रेस्टिज' का अर्थ समझ सकेगा या नहीं, यह भी ध्यान नही रहा, पर मदन बिना समझाये ही सब कुछ समझ गया था।



2. उपन्यास की परिभाषा देते हुए उसके स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

उपन्यास में पात्र-योजना को स्पष्ट कीजिए।

3. उपन्यास के तत्वों के आधार पर गबन की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

गबन में किन समस्याओं को उठाया गया है विवेचना कीजिए।

4. कहानी की संरचना में शिल्प के महत्त्व पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

कहानी के विविध रूपों को स्पष्ट कीजिए।

5. 'परदा' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। (12)

अथवा

'हरी बिंदी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करते हुए उसकी मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए :- (7)

(क) 'रोज' कहानी के आधार पर मालती का चरित्र-चित्रण

(ख) 'दिल्ली में एक मौत' में सामाजिक यथार्थ

(ग) 'डाज्यू' की भाषा-शैली।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4474 C

Unique Paper Code : 12051301

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Adhunik Kaal)

Name of the Course : B.A. (Hons) Hindi - CBCS

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्नों अनिवार्य हैं।

1. मध्यकालीन बोध और आधुनिक बोध में अंतर स्पष्ट करते हुए आधुनिक बोध को व्याख्यायित कीजिए।

अथवा

खड़ी बोली आंदोलन में महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान की चर्चा कीजिए। (15)

P.T.O.

2. हिंदी उपन्यास का विकासात्मक परिचय दीजिए।

अथवा

हिन्दी नाटक की विकास-यात्रा का विवेचन कीजिए। (15)

3. प्रगतिवादी काव्य के परिवेश और प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

नई कविता नवीन भाव बोध और नवीन शिल्प विधान की कविता है- इस आधार पर नई कविता की मूल प्रवृत्तियों का उद्घाटन कीजिए। (15)

4. साठोत्तरी कविता की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

स्त्री विमर्श, स्त्री स्वातंत्र्य के किन बिन्दुओं पर आधारित है- विस्तारपूर्वक उत्तर दीजिए। (15)

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(क) नवजागरण और भारतेन्दु युग

(ख) हिन्दी आलोचना

(ग) छायावाद

(घ) साहित्यिक पत्रकारिता

**(5000)**

(2)

[This question paper contains 2 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3370** **C**

Unique Paper Code : 62053302

Name of the Paper : रचनात्मक लेखन (SEC)

Name of the Course : **B.A.(Prog.)**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भाव एवं विचार की रचना में अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

अभिव्यक्ति के क्षेत्र में विज्ञापन की भूमिका स्पष्ट कीजिए। (10)

2. बाल साहित्य के स्वरूप पर विचार करते हुए उसकी विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

अथवा

मौखिक एवं लिखित साहित्य में भाषा की विविध भंगिमाओं को स्पष्ट कीजिए। (10)

P.T.O.

3. रचना-सौष्ठव में अलंकारों के योगदान का महत्त्व लिखिए।

अथवा

विविध भाषिक संदर्भों में क्षेत्रीयता की भूमिका पर विचार कीजिए। (10)

4. औपचारिक और अनौपचारिक लेखन से आप क्या समझते हैं? इनके बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

अर्थ निर्मिति के विविध आधार स्पष्ट कीजिए। (10)

5. नाटक में वस्तु और परिवेश का महत्त्व रेखांकित कीजिए।

अथवा

कविता में संवेदना की भूमिका स्पष्ट कीजिए। (10)

6. निबंध विधा का परिचय दीजिए।

अथवा

कविता की रचना प्रक्रिया में लय, गति, तुक और छन्द के महत्त्व पर विचार कीजिए। (10)

7. **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए :- (8 + 7)

(क) पुस्तक समीक्षा (ख) यात्रा वृत्तांत

(ग) पटकथा (घ) रेडियो।

(1000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3137 C

Unique Paper Code : 62055501

Name of the Paper : अनुवाद : व्यवहार और सिद्धांत

Name of the Course : B.A. (Prog.) Hindi (CBCS) – GE

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1 इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1 अनुवाद का अर्थ स्पष्ट करते हुए 'भाषायी परिदृश्य और अनुवाद' पर प्रकाश डालिए।

अथवा

विधि और सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद की समस्याओं पर विचार कीजिए। (12)

2 अनुवाद के उपकरण से आप क्या समझते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याओं पर विचार कीजिए। (12)

P.T.O.

3. नीचे दिए गए अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : (10)

Pollution is a significant threat to our environment and is caused by the reckless attitude of man towards nature. Our Earth provides us with food and shelter, whereas we treat it mercilessly and plunder its resources. Pollution is a direct result of our greed. We dump waste into our water bodies without caring for the organisms living in them. The balance of various gases in the atmosphere has been disrupted because of the large number of vehicles plying on the road. Even factories that release harmful gases into the atmosphere contribute to air pollution. When we do excessive and uncontrolled farming on a piece of land, it loses its natural minerals. So, when we use fertilizers to boost their productivity, it pollutes the soil. Noise pollution is caused by factories, jets, airplanes, etc. It harms our ears and can impair hearing.

**Or**

It is rightly said that being disciplined is essential in life. When a person leads a disciplined life, he or she sets an easy path to success. He or she will develop an approach to happiness and a beautiful future ahead. Being disciplined is the practice of having a scheduled daily routine which helps an individual to be punctual and hard working. Therefore, being disciplined is



taught from a very young age in school and at home so that the child maintains the same throughout life. Even though discipline takes a lot of effort, the advantages of a disciplined life make it a worthwhile Endeavor.

4. नीचे दिए गए अनुच्छेद का अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए : (10)

गांधी जी का मानना था कि भारत में अंग्रेज़ी हुकूमत भारतीयों के सहयोग से ही संभव हो पाई थी और अगर हम सब मिलकर अंग्रेज़ों के खिलाफ हर बात पर असहयोग करें तो आज़ादी संभव है। गांधी जी की बढ़ती लोकप्रियता ने उन्हें कांग्रेस का सबसे बड़ा नेता बना दिया था और अब वह इस स्थिति में थे कि अंग्रेज़ों के विरुद्ध असहयोग, अहिंसा तथा शांतिपूर्ण प्रतिकार जैसे अस्त्रों का प्रयोग कर सकें। इसी बीच जलियांवाला नरसंहार ने देश को भारी आघात पहुंचाया जिससे जनता में क्रोध और हिंसा की ज्वाला भड़क उठी थी। गांधी जी ने स्वदेशी नीति का आह्वान किया जिसमें विदेशी वस्तुओं विशेषकर अंग्रेज़ी वस्तुओं का बहिष्कार करना था। उनका कहना था कि सभी भारतीय अंग्रेज़ों द्वारा बनाए वस्त्रों की अपेक्षा हमारे अपने लोगों द्वारा हाथ से बनाई गई खादी पहनें। उन्होंने पुरुषों और महिलाओं को प्रतिदिन सूत कातने के लिए कहा।

**अथवा**

शिक्षा हमारे आसपास की चीज़ों को सीखने का कार्य है। यह हमें किसी भी समस्या को आसानी से समझने और उससे निपटने में मदद करता है और पूरे जीवन में हर पहलू में संतुलन बनाता है। शिक्षा हर इंसान का पहला और महत्वपूर्ण अधिकार है। शिक्षा के बिना हम अधूरे हैं

और हमारा जीवन बेकार है। शिक्षा हमें एक लक्ष्य निर्धारित करने और जीवन भर उस पर काम करके आगे बढ़ने में मदद करती है। यह हमारे ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास स्तर और व्यक्तित्व में सुधार करता है। यह हमारे जीवन में दूसरों के साथ बातचीत करने के लिए हमें बौद्धिक रूप से सशक्त बनाता है। शिक्षा परिपक्वता लाती है और हमें बदलते परिवेश के साथ समाज में रहना सिखाती है। यह सामाजिक विकास, आर्थिक विकास और तकनीकी विकास का तरीका है।

5. (क) नीचे दिए गए शब्दों में से किन्हीं **नौ** का हिंदी प्रतिरूप लिखिए : (९)

Adverse, Adjournment, Bail, Bureaucracy, Cash Sheet, Ex officio, File, Lease, Lump sum, Yellow journalism, Joining Report, Memorandum, Payee

(ख) नीचे दिए गए शब्दों में से किन्हीं **नौ** का अंग्रेजी प्रतिरूप लिखिए (९)

पत्रकार-सम्मेलन, मानदेय, नवीकरण, समाशोधन, पट्टा, अवैतनिक, न्यायिक जाँच, स्थगन, ठकेदार, कानूनी सलाहकार, प्रार्थी, गुप्त, देय, कार्यसूची, परिपत्र, प्रभार, समायोजन।

6. किन्हीं दो टिप्पणी लिखिए :

(क) अनुवाद के प्रकार (7)

**अथवा**

वर्तमान संदर्भ में कोश-ग्रंथ की उपयोगिता

(ख) अनुवाद का स्वरूप (6)

**अथवा**

अनुवाद प्रक्रिया

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 4277** **C**

Unique Paper Code : 12057502

Name of the Paper : Hindi Bhasha Ka Vyavaharik Vyakaran

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. व्यंजन किसे कहते हैं? हिंदी व्यंजनों का वर्गीकरण कीजिए। (12)

अथवा

व्याकरण का अर्थ बताते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

2. स्रोत के आधार पर शब्द के भेद उदाहरण सहित लिखिए। (12)

P.T.O.

अथवा

विशेषण की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

3. शब्द-निर्माण की प्रक्रिया में संधि और समास के महत्व पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

क्रिया की परिभाषा देते हुए सहायक क्रिया के भेद उदाहरण सहित लिखिए।

4. वाक्य को परिभाषित करते हुए रचना के आधार पर वाक्य के भेद लिखिए। (12)

अथवा

वाक्य संरचना के अंतर्गत 'अन्विति' के नियम लिखिए।

5. निर्देशानुसार निम्नलिखित के उत्तर दीजिए - (2×6=12)

(क) किन्हीं चार शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए :

महाकवी, परीभाषित, साशन, पददलीत, व्यवहरिक, कुटील, तकदिर, चरचित



(ख) 'आवट' और 'आलु' प्रत्यय से बनने वाले दो-दो शब्द लिखिए।

(ग) किन्हीं चार शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए :

वीरांगना, अधिकांश, पुष्पांजलि, प्राणायाम, वृक्षारोपण, गजानन, न्यायाधीश, भोजनालय

(घ) किन्हीं चार का विग्रह करके समास बताइए :

अकाल पीड़ित, गिरिधर, अपना पराया, आजीवन, तिरंगा, अध्यपका, डाक गाड़ी, ऋण मुक्त

(ङ) किन्हीं चार का रूप परिवर्तन करके भाववाचक संज्ञा बनाइए :

इंसान, चोर, अपना, अच्छा, बच्चा, काटना, ऊपर, कटु

(च) वाक्य शुद्ध करके लिखिए :

(i) पुस्तक मेज पर रख्या है।

(ii) वह लोग कहां रहता है?

(iii) मेरे तो यहां अनेकों लोग परिचित हैं।

(iv) आजकल दोस्त सबसे कम बहुत मिलते हैं।

6. टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(क) स्वरों के भेद

अथवा

मात्राएँ

(ख) विराम - चिह्न

अथवा

वाक्य के अंग

9/12/22

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 4076** **C**

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिन्दी नाटक/एकांकी

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) छोटे चित्त भीरु बुद्धि मन चंचल बिगत उछाह।
उदर-भरन-रत, ईस विमुख सब भए प्रजा नरनाह॥
इनसों कछु आस नहिं ये तो सब विधि बुद्धि-बलहीन।
बिना एकता बुद्धि-कला के भए सबहि विधि दीन॥

P.T.O.

अथवा

हा! भारतवर्ष को ऐसी मोहानिद्रा ने घेरा है कि अब इसके उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान बूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? हा दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँक उधार लगवाता है।

(ख) शास्त्रों में अनुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह की बातें मिल सकती है परन्तु जिस प्रथा के लिए विधि और निषेध दोनों तरह की सूचनाएँ मिले, तो इतिहास की दि से वह उस काल में सम्भाव्य मानी जाएँगी। हाँ, समय-समय पर उनमें विरोध और सुधार हुए होंगे और होते रहेंगे। मुझे तो केवल यही देखना है कि इस घटना की संभावना इतिहास की दृष्टि से उचित है कि नहीं।

अथवा

अर्थ! आप बोलते क्यों नहीं? आप धर्म के नियामक जिन स्त्रियों को धर्मबन्ध में बांधकर, उनकी सम्मति के बिना आप उनका सब अधिकार छीन लेते हैं, तब क्या धर्म के पास कोई प्रतिकार-कोई संरक्षण नहीं रख छोड़ते, जिससे वे स्त्रियाँ अपनी आपति में अवलम्ब मांग सकें? क्या भविष्य के सहयोग की कोरी कल्पना से उन्हें आप संतुष्ट रहने की आज्ञा देकर विश्राम ले लेते हैं?



(ग) कौन कसूर भइल हमसे मैया
बिरवा गइल मुरझाय हो,
सींचत सींचत उसर सिरानी
नेकु नहीं हरिआय हो।
आपन खून पिरनवा न साथी
अंसुअन कोहि पतिआय हो।

अथवा

सरदार साहब, राजा साहब, बाबू साहब, सबके साथ यही दिक्कत है। कम्बख्त जीवन की कला नहीं जानते; प्रियमान-से, निहत्थे फौजियों की तरह यह मौत तक खिसकते तक खिसकते जाते हैं, जब उन्होंने देखा कि मैं उन से भीख नहीं माँगता, उनके तलवे नहीं सहलाता, ग्रह नहीं बनाता, षड्यंत्र नहीं करता तो मुँह बा कर रह गये। जी हाँ, मुँह बा कर रह गये।

2. भारत दुर्दशा नाटक की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

नाटक के तत्त्वों के आधार पर भारत दुर्दशा का विश्लेषण कीजिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नायिका प्रधान नाटक है। समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में चित्रित मूल समस्या पर प्रकाश डालिए।

4. 'बकरी' नाटक वर्तमान राजनीति परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है। विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

'बकरी' एक प्रतीकात्मक नाटक है। समीक्षा कीजिए।

5. 'सूखी डाली' एकांकी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

शिल्प की दृष्टि से 'तीन अपाहिज' एकांकी का विश्लेषण कीजिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

C

**Sr. No. of Question Paper : 3297**

Unique Paper Code : 62057503

Name of the Paper : Hindi Rangmanch

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi CBCS-DSE-I**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. पारंपरिक रंगमंच से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित विवेचन कीजिए। (14)

अथवा

नौटंकी की कानपुर और हाथरस शैली का परिचय देते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

2. 'माधव प्रसाद शुक्ल का रंगकर्म हिंदी रंगमंच की परंपरा और प्रयोग का संयोजन है'- कथन की युक्ति-युक्त समीक्षा कीजिए। (14)

P.T.O.

अथवा

हिंदी क्षेत्र के रंगमंच के प्रसार में भारत भवन (भोपाल) की भूमिका का उल्लेख कीजिए।

3. आधुनिक रंगमंच में शैलीबद्ध अभिनय पद्धति का विश्लेषण कीजिए। (14)

अथवा

आधुनिक हिंदी रंगमंच में लोक-रंग शैली का प्रयोग, रंग संभावनाओं के अनेक द्वार खोलता है- विश्लेषण कीजिए।

4. 'भिखारी ठाकुर ने लोकजीवन को अपनी रंगदृष्टि का केंद्र बनाया'- कथन को स्पष्ट कीजिए। (14)

अथवा

'इब्राहिम अल्काजी ने हिंदी रंगमंच में प्रयोग की दृष्टि से अनेक परिवर्तन किए' - इस पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए: (6,6,7)

(क) रासलीला

(ख) पांडवानी

(ग) पारसी थिएटर

(घ) भारतेंदु नाट्य अकादमी, लखनऊ

(ङ) राधेश्याम कथावाचक का हिंदी रंगमंच में योगदान

(2000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3211** **C**

Unique Paper Code : 62057503

Name of the Paper : Hindi Rangmanch

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi CBCS-DSE-1**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. पारंपरिक रंगमंच की प्रमुख शैलियों का सामान्य परिचय दीजिए। (14)

अथवा

लोकनाट्य रामलीला की विभिन्न प्रदर्शन शैलियों का विवेचन कीजिए।

2. भारतेंदुयुगीन हिंदी रंगमंच पर प्रकाश डालिए। (14)

P.T.O.

अथवा

हिंदी रंगमंच को विस्तार देने में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के योगदान को रेखांकित कीजिए।

3. हिंदी रंगमंच में लोकशैली की भूमिका और महत्व को स्पष्ट कीजिए। (14)

अथवा

यथार्थवादी शैली का उदाहरण सहित परिचय दीजिए।

4. ब. व. कारंत ने लोकशैली को आधार बनाकर हिंदी रंगमंच में सृजनात्मक प्रयोग किए हैं - स्पष्ट कीजिए। (14)

अथवा

सत्यदेव दुबे की रंगदृष्टि का विस्तार से विवेचन कीजिए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : (6,6,7)

(क) सांग

(ख) पृथ्वी थिएटर

(ग) एब्सर्ड शैली

(घ) झाडूराम देवांगन की रंग दृष्टि

(ङ) माच

(2000)

(2)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4035 C

Unique Paper Code : 12051501

Name of the Paper : Pashchatya Kavyashastra

Name of the Course : HINDI (Hons.)

Semester : V

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

लोंजाइनस के उदात्त सिद्धांत को स्पष्ट कीजिए।

2. कॉलरिज के काव्यभाषा संबंधी मान्यताओं का परिचय दीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

टी.एस.इलियट की परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा संबंधी अवधारणा को स्पष्ट करें।

3. स्वच्छंदतावाद की अवधारणा पर प्रकाश डालें। (12)

अथवा

मार्क्सवादी आलोचना का सामान्य परिचय दीजिए।

4. बिम्ब को स्पष्ट करते हुए काव्य में उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

विसंगति और विडंबना की अवधारणा को उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए - (9,9,9)

(क) त्रासदी

(ख) कॉलरीज का कल्पना सिद्धांत

(ग) फैन्टेसी

(घ) उत्तर संरचनावाद

(ङ) प्रतीक